'सद्गति': पवित्र शब्द तले दबा उपेक्षित समुदाय

ए. व्हि. सूर्यवंशी*

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.19501930

ABSTRACT

प्रस्तुत शोध आलेख मुंशी प्रेमचंद की कहानी 'सद्गति' के माध्यम से भारतीय ग्रामीण समाज में व्याप्त जातिवाद, छुआछूत और धार्मिक पाखंड की गहन पड़ताल करता है। कहानी के मुख्य पात्र 'दुखी चमार' के जीवन और उसकी कारुणिक मृत्यु के इर्द-गिर्द बुना गया यह विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि किस प्रकार वर्ण-व्यवस्था और मानसिक दासता मिलकर एक मनुष्य की गरिमा का हनन करती हैं। आलेख में मुख्य रूप से मानसिक दासता, अमानवीय शोषण, दलित संवेदना और मौन विद्रोह जैसे बिंदुओं पर प्रकाश डाला गया है। यह शोध दर्शाता है कि प्रेमचंद ने 'सद्गति' शीर्षक के माध्यम से उस विडंबनापूर्ण व्यवस्था पर तीखा कटाक्ष किया है, जहाँ धर्म की ओट में मनुष्यता का गला घोंटा जाता है। यह आलेख कहानी की समकालीन प्रासंगिकता को रेखांकित करते हुए सामाजिक न्याय और मानवीय गरिमा के अनसुलझे प्रश्नों को मुखर करता है।

KEYWORDS: प्रेमचंद, सद्गति, दलित संवेदना, जातिवाद, छुआछूत, धार्मिक पाखंड, बेगार, मानसिक दासता, सामाजिक न्याय।

प्रस्तावना:

मुंशी प्रेमचंद हिंदी साहित्य के उन बिरले रचनाकारों में से हैं, जिन्होंने साहित्य को केवल कल्पना का लोक न मानकर उसे समाज के कठोर यथार्थ का दर्पण बनाया। उनकी कालजयी कहानी 'सद्गति' भारतीय समाज की उस जर्जर और अमानवीय व्यवस्था पर एक करारा प्रहार है, जहाँ धर्म और जाति के नाम पर मनुष्यता का गला घोंटा जाता रहा है। यह कहानी मात्र एक निर्धन व्यक्ति की मृत्यु की गाथा नहीं है, बल्कि सदियों से चले आ रहे वर्ण-व्यवस्था के अहंकार, धार्मिक पाखंड और दलित समाज की विवशता का नग्न दस्तावेज़ है।

* **डॉ. ए. व्हि. सूर्यवंशी**, प्राचार्य, बी.एल.डी.ई. संस्था बसवेश्वर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, बसवन बागेवाडी.

'सद्गति' के माध्यम से प्रेमचंद द्वारा उकेरी गई उन सूक्ष्म परतों का विश्लेषण किया गया है, जो छुआछूत की विभीषिका, मानसिक दासता और शोषण के विभिन्न रूपों को उजागर करती हैं। यह विश्लेषण न केवल कहानी के कथानक को स्पष्ट करता है, बल्कि 'सद्गति' जैसे पवित्र शब्द के पीछे छिपे तीखे व्यंग्य और शोषित वर्ग के भीतर पनपते मौन विद्रोह की वैचारिक पड़ताल भी करता है। आधुनिक संदर्भों में भी यह कहानी उतनी ही प्रासंगिक है, क्योंकि यह हमें मनुष्य की गरिमा और सामाजिक न्याय के उन अनसुलझे सवालों के आमने-सामने खड़ा करती है, जिनका उत्तर आज भी प्रतीक्षित है।

कहानी का सार:

कहानी का आरंभ दुखी चमार की अपनी बेटी की सगाई के लिए पंडित घासीराम को बुलाने की तैयारी से होता है। दुखी बेहद सीधा-सादा और धार्मिक स्वभाव का व्यक्ति है, जो पंडित जी को अत्यधिक सम्मान देता है। वह पंडित जी के पास खाली हाथ नहीं जाना चाहता, इसलिए वह घास का एक भारी गट्ठा लेकर उनके घर पहुँचता है। दुखी के मन में ऊंची जाति के प्रति इतनी गहरी श्रद्धा है कि वह कहता है- "यह तेजस्वी मूर्ति देख कर उसका हृदय श्रद्धा से परिपूर्ण हो गया। कितनी दिव्य मूर्ति थी!"[1] और डर है कि वह अपनी पत्नी को भी सचेत करता है कि पंडित जी के घर कुछ ऐसा न हो जाए जिससे उनका 'धर्म' भ्रष्ट हो जाए। पंडित जी के द्वार पर पहुँचकर वह उन्हें साष्टांग दंडवत प्रणाम करता है।

कहानी के मध्य में पंडित घासीराम का हृदयहीन और शोषक रूप सामने आता है। पंडित जी दुखी की श्रद्धा का लाभ उठाते हुए उसे बिना कुछ खिलाए-पिलाए अपने घर के कई कठिन कामों में लगा देते हैं। पहले उससे झाड़ू लगवाई जाती है, फिर गोबर लिवाया जाता है और अंत में उसे एक पुरानी, गाँठदार लकड़ी का लट्ठा चीरने का काम सौंप दिया जाता है। चिलचिलाती धूप में भूखा-प्यासा दुखी घंटों मेहनत करता है, लेकिन लकड़ी नहीं टूटती। जब वह आग माँगने घर के अंदर जाता है, तो पंडिताइन उसे बुरी तरह अपमानित करती हैं, "अरे! तुम तो अंदर चले आये, क्या अछूतों का घर है जो चाहे जब घुस आओ!"[2] फिर भी वह इसे अपना भाग्य मानकर काम जारी रखता है।

कहानी का अंत दुखी की अत्यंत दुखद मृत्यु के साथ होता है। अत्यधिक थकान और कमजोरी के कारण वह बेदम होकर गिर जाता है और उसके प्राण निकल जाते हैं। उसकी मृत्यु के बाद मानवीय संवेदना के बजाय 'छुआछूत' की समस्या प्रमुख हो जाती है। कोई भी ब्राह्मण शव को हाथ नहीं लगाना चाहता और चमार जाति के लोग भी गोंड के डर से शव उठाने नहीं आते। अंत में, पवित्रता का ढोंग करने वाले पंडित घासीराम स्वयं एक रस्सी का फंदा बनाकर दुखी के पैर में फँसाते हैं और उसकी लाश को घसीटते हुए गाँव के बाहर फेंक आते हैं। 'सद्गति' अर्थात् 'अच्छी मृत्यु' जैसा पवित्र शब्द यहाँ सामाजिक व्यवस्था के क्रूर चेहरे पर एक गहरा व्यंग्य बनकर रह जाता है।

सद्गति कहानी और दलित संवेदना:

प्रेमचंद की कहानी 'सद्गति' दलित संवेदना और सवर्ण मानसिकता के क्रूर अंतर्विरोधों को उघाड़ने वाली एक सशक्त रचना है। इस कहानी में व्यक्त दलित संवेदना के मुख्य बिंदु-

1. गहरी मानसिक दासता और हीन भावना:

कहानी का मुख्य पात्र दुखी चमार केवल शारीरिक रूप से ही नहीं, बल्कि मानसिक रूप से भी जातिवादी व्यवस्था का गुलाम है। वह अपनी गरीबी और पिछड़ेपन को अपना 'भाग्य' और ब्राह्मण की सेवा को अपना 'धर्म' मानता है। जब पंडिताइन उस पर जलती हुई लकड़ी फेंकती हैं, तो वह क्रोधित होने के बजाय खुद को दोषी मानता है कि उसने एक ब्राह्मण के घर में कदम रखकर उसे अपवित्र कर दिया। "ब्राह्मण का घर है, कोई मामूली बात नहीं है। भगवान ने उन्हें बनाया ही इसीलिए है कि हम उनकी सेवा करें।"[3] यह उस गहरी मानसिक दासता को दर्शाता है जहाँ शोषित व्यक्ति शोषण को ही न्यायसंगत मानने लगता है।

2. बेगार और अमानवीय शोषण:

दलित संवेदना का एक बड़ा पक्ष 'बेगार' अर्थात् 'बिना मजदूरी के काम करने' की समस्या है। पंडित घासीराम दुखी को अपनी बेटी की सगाई का मुहूर्त निकालने के बदले दिन भर के कठिन श्रम में झोंक देते हैं। भूखा-प्यासा दुखी चिलचिलाती धूप में पत्थर जैसी सख्त लकड़ी चीरता रहता है। प्रेमचंद यहाँ दिखाते हैं कि ऊँची जाति के लिए एक दलित का श्रम मुफ्त की वस्तु है और उसके जीवन का कोई मूल्य नहीं है।

3. छुआछूत की पराकाष्ठा:

कहानी में छुआछूत की बीभत्सता तब सामने आती है जब दुखी की मृत्यु हो जाती है। ब्राह्मण समाज को दुखी की मृत्यु का दुख नहीं है, बल्कि समस्या इस बात की है कि उसकी 'अपवित्र' लाश उनके द्वार पर पड़ी है। कोई भी उसे छूने को तैयार नहीं है। "चमार की लाश घर के सामने पड़ी है, अब कोई ब्राह्मण उधर से कैसे निकलेगा?"[4] यहाँ तक कि दुखी के अपने समाज के लोग भी पंडित के डर से शव उठाने नहीं आते। यह दलित समाज की उस विवशता और भय को दर्शाता है जो सदियों से सवर्णों के वर्चस्व के कारण उनके मन में बैठा है।

4. मानवीय गरिमा का अभाव:

कहानी का अंत दलित संवेदना को झकझोर कर रख देता है। जिस व्यक्ति ने जीवन भर सेवा की, उसे मृत्यु के बाद सम्मानजनक अंतिम संस्कार भी प्राप्त नहीं होता। पंडित जी उसे एक जानवर की तरह पैर में रस्सी बांधकर घसीटते हुए ले जाते हैं। यह दृश्य उस अमानवीयता को चरम पर दिखाता है जहाँ एक मनुष्य को मनुष्य की गरिमा तक नहीं दी जाती।

'सद्गति' कहानी में व्यक्त दलित संवेदना केवल एक व्यक्ति के दुख की

कहानी नहीं है, बल्कि यह उस पूरी सामाजिक संरचना पर प्रहार है जो धर्म और शुचिता के नाम पर एक बड़े वर्ग का शोषण करती है। प्रेमचंद ने 'सद्गति' शब्द का प्रयोग करके उस व्यवस्था पर तीखा कटाक्ष किया है जो जीते जी और मरने के बाद भी दलित को अपमानित करती है।

कहानी में शोषण का विरोध:

सद्गति कहानी में शोषण का विरोध सीधे तौर पर पात्रों के विद्रोह से नहीं, बल्कि लेखक के व्यंग्य और परिस्थितियों के चित्रण के माध्यम से व्यक्त हुआ है। प्रेमचंद ने दिखाया है कि कैसे एक अमानवीय व्यवस्था के खिलाफ चुप्पी भी एक गहरा विरोध दर्ज करा सकती है।

5. चमार टोली की सामूहिक चेतना-मौन विरोध:

कहानी का सबसे सशक्त विरोध तब दिखाई देता है जब दुखी की मृत्यु हो जाती है। जब पंडित घासीराम दुखी के शव को हटवाने के लिए चमार टोली के पास जाते हैं, तो वहाँ का एक जागरूक व्यक्ति गोंड सबको सचेत कर देता है। वह कहता है- "खबरदार, कोई लाश उठाने मत जाना! पुलिस की जाँच होगी, पंडित जी फँसेंगे।"[5] यह दलित समाज की ओर से किया गया एक संगठित मौन विरोध था। जहाँ वे हमेशा दबे रहते थे, वहाँ इस बार उन्होंने पंडित की बेगार करने या उनकी समस्या सुलझाने से इनकार कर दिया।

6. गोंड पात्र के माध्यम से तीखा प्रहार:

कहानी में 'गोंड' का पात्र एक सचेत और तार्किक सोच रखने वाले व्यक्ति के रूप में आता है। जब दुखी भूखा-प्यासा लकड़ी चीर रहा होता है, तो गोंड ही उसे टोकता है और कहता है कि- "पंडित जी से कुछ खाने को क्यों नहीं माँगते? क्या वे तुम्हें मार डालेंगे?"[6] गोंड का यह व्यवहार उस समय की रूढ़िवादी व्यवस्था के प्रति एक वैचारिक विद्रोह है। वह दुखी को उसकी गुलामी का अहसास कराने की कोशिश करता है।

7. लेखक का व्यंग्यात्मक प्रहार:

प्रेमचंद ने कहानी का शीर्षक 'सद्गति' रखकर पूरी सामाजिक और धार्मिक व्यवस्था पर करारा तमाचा जड़ा है। जिस व्यक्ति को मरने के बाद कफ़न और सम्मानजनक विदाई तक न मिली, उसकी मृत्यु को 'सद्गति' कहना लेखक का सबसे बड़ा विरोध है। यह पाठकों के मन में उस व्यवस्था के प्रति घृणा पैदा करता है जो धर्म की आड़ में शोषण करती है।

8. प्रकृति और परिस्थिति का चित्रण:

कहानी में उस 'गाँठदार लकड़ी' का न फटना भी एक प्रकार का प्रतीकात्मक विरोध है। वह लकड़ी दुखी के अटूट श्रम के आगे भी नहीं झुकती, जो यह संकेत देती है कि पंडित का काम नामुमकिन और अन्यायपूर्ण था। दुखी की मृत्यु स्वयं उस व्यवस्था के मुँह पर एक तमाचा है, जो अंततः पंडित घासीराम को स्वयं अपने हाथों से लाश घसीटने पर मजबूर कर देती है।

'सद्गति' में शोषण का विरोध सक्रिय क्रांति के रूप में नहीं, बल्कि नैतिक और सामाजिक पतन को दिखाने के रूप में हुआ है। प्रेमचंद यह संदेश देते हैं कि जब शोषण अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच जाता है, तो शोषित वर्ग का सहयोग समाप्त हो जाता है और शोषक को अंततः अपने पापों का बोझ खुद ही ढोना पड़ता है।

निष्कर्ष:

मुंशी प्रेमचंद की कहानी 'सद्गति' धार्मिक पाखंड और जातिगत भेदभाव की एक अत्यंत हृदयविदारक कथा है, जिसमें दुखी चमार अपनी बेटी की सगाई का मुहूर्त निकलवाने के लिए पंडित घासीराम के घर जाता है और वहाँ उसके साथ जो अमानवीय व्यवहार होता है, वह समाज के क्रूर चेहरे को उजागर करता है। पंडित घासीराम अपनी धार्मिक श्रेष्ठता के अहंकार में भूखे-प्यासे दुखी से मुफ्त में कठिन शारीरिक श्रम करवाते हैं और अंततः अत्यधिक थकान व भूख के कारण दुखी की मृत्यु हो जाती है, जिसके बाद उसके शव को भी मनुष्य की गरिमा न देकर एक जानवर की तरह घसीटकर कूड़े के ढेर पर फेंक दिया जाता है।

कहानी का शीर्षक 'सद्गति' उस खोखली सामाजिक और धार्मिक व्यवस्था पर एक तीखा व्यंग्य है, जो जीते जी व्यक्ति का शोषण करती है और मृत्यु के बाद उसे सम्मानजनक अंतिम विदाई तक नसीब नहीं होने देती।

संदर्भ सूची:

1. प्रेमचन्द, मुंशी। सद्गति। राज्य संसाधन केन्द्र, हरियाणा, डिजिटल संस्करण, पृष्ठ 6
2. वही पृष्ठ 8
3. वही पृष्ठ 8-9
4. वही पृष्ठ 12
5. वही पृष्ठ 13
6. वही पृष्ठ 10